दादी गुणों और अनुभवों की निधि

ब्र.कु.रमेश शाह

दादी प्रकाशमणि जी ने मुझे तथा मेरे लौकिक परिवार को अपने रीति से संवारा। आज मैं तथा मेरे लौकिक परिवार वाले जो भी ईश्वरीय सेवायें कर रहे हैं, उसके पीछे उनकी पालना का महत्वपूर्ण स्थान है। बातें तो अनेक हैं, समझ में नहीं आता कहाँ से शुरू करें और कहाँ अन्त करें क्योंकि लेख के रूप में लिखने की एक मर्यादा होती है, फिर भी संक्षिप्त में दादी जी के साथ के संस्मरण लिखता हूं।

दादी जी जहाँ पाँव रखती थीं वहाँ सेवा हो जाती थी

सन् 1952 में जब मेरा इस विश्व विद्यालय के साथ परिचय हुआ तब से इसके सभी अनन्य रत्नों का परिचय तो था ही और कईयों के परोक्ष व अपरोक्ष रूप से संपर्क में भी आया था। जब दादी जी और रतनमोहिनी दादी जी जापान गये, तब मुझे वह समाचार मिला और मैंने दादी जी को पत्र लिखा कि श्रीमद्भगवतगीता पाठशाला के मुखिया पांडुरंग शास्त्री जी तथा उनके एक साथी जिनके साथ मेरा पहले बहुत घनिष्ठ संबंध था तथा जो बाहर के तत्वज्ञान के बहुत बड़े विद्वान हैं, भी जापान के विश्व धर्मसम्मेलन में आये हुए हैं, तो आप उनको भोजन के लिए रोज़ अपने पास बुलाना और उनकी ईश्वरीय सेवा करना। मैंने शास्त्री जी को भी मुंबई में कहा था कि आप और आपके साथी जापान जा रहे हैं, वहां आपको खाने की दिक्कत होगी इसलिए मैंने ब्रह्माकुमारी बहनों को लिखा है, आप भी उनसे संपर्क करना। दोनों ने मेरी बात मानी और जापान की दस दिन की कांफ्रेंस में दादी जी ने और रतनमोहिनी दादी जी ने उन दोनों को अपने हाथ से पकाया हुआ पवित्र भोजन खिलाया और साथ ही यज्ञ का इतिहास भी बहुत विस्तार से सुनाया। परिणाम स्वरूप जब शास्त्री जी मुंबई आये तब उन्होंने मुझे कहा कि रमेश भाई, ब्रह्माकुमारी संस्था का इतिहास सुनकर जब मैंने जाना कि पुरूष प्रधान समाज ने बहनों की आध्यात्मिक उन्नति में कितनी रूकावट डाली तो मेरी आँखों में पानी भर आया। बाद में हमेशा ही शास्त्री जी का विश्व विद्यालय के साथ स्नेह भरा संबंध रहा और शास्त्री जी प्यारे ब्रह्मा बाबा तथा प्यारी मातेश्वरी जी से मिलने भी आये। इस प्रकार से, अपरोक्ष रूप से दादी जी के द्वारा सेवा हुई, उसका मैं साक्षी हूँ।

दादी जी से पहली प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की

बाद में दादी जी जब पटना में थे और ब्रह्मा बाबा जब मुंबई आते थे तो दादी जी भी मुंबई का चक्कर लगाती थीं परंतु मेरा इतना घनिष्ठ संबंध दादी जी के साथ नहीं था क्योंकि ब्रह्मा बाबा की उपस्थिति में ज़्यादा कारोबार ब्रह्मा बाबा से ही होता था। परंतु जब सन् 1964 में हम सबने प्रदर्शनी के चित्र बनाने का कार्य शुरू किया तो पहला-पहला चित्र 'सच्चा वैष्णव कौन?' बनाया गया और ब्रह्मा बाबा के पास वह चित्र लिखत सहित प्रमाणित कराने के लिए भेजा गया। दो दिन में ही ब्रह्मा बाबा ने उस लिखत में सुधार कर दुबारा अच्छे अक्षरों में लिखवा कर भेजा तो मैंने ब्रह्मा बाबा को पत्र लिखा कि बाबा, ये आपके अक्षर नहीं हैं, ये किसने लिखा है? तो ब्रह्मा बाबा ने लिखा कि बच्चे, कुमारका बच्ची यहां है, उसी ने लिखत को सुधार करके भेजा है। तो हमने ब्रह्मा बाबा को लिखा कि जब हमारे चित्रों की लिखत कुमारका बहन को ही फाइनल करनी है तो क्यों नहीं आप कुमारका बहन जी को अपने प्रतिनिधि के रूप में मुंबई भेज दें। बाबा ने हमारी बात को माना और टेलीग्राम किया कि कुमारका बच्ची को रिसीव करो। इस प्रकार प्रदर्शनी के पहले चित्र से ही दादी जी का पूर्ण सहयोग प्रदर्शनी की सेवा के लिए मिला और दादी जी ने ही प्रदर्शनी के सभी चित्रों की समझानी फाइनल की। जब पहली प्रदर्शनी का उद्घाटन महाराष्ट्र के राज्यपाल मंगलदास पकवासा ने किया तब दादी जी और ऊषा बहन ने उन्हें समझाया और उनसे ओपिनियन लिखवाया। गवर्नर ने लिखा, यह अद्भुत प्रदर्शनी है। बाद में सभा में संबोधन के लिए भी गवर्नर गये। इस प्रकार प्रदर्शनी सेवा में ओपिनियन लिखवाने की शुरूआत भी दादी जी ने की। बाद में मातेश्वरी जी का मुंबई आना हुआ और मातेश्वरी जी ने दादी जी तथा सभी महारथी भाई-बहनों को बुलाकर प्रदर्शनी की सेवा विहंग मार्ग की सेवा है, यह प्रस्तावित किया।

इतने में ही ब्रह्मा बाबा को ईस्टर्न ज़ोन की सेवा के लिए अच्छे हैण्ड्स की जरूरत थी तो दादी निर्मलशान्ता ने कोलकाता जाने की ऑफर ब्रह्मा बाबा को की और ब्रह्मा बाबा ने फौरन उस बात को स्वीकार कर दादी निर्मलशान्ता को वहाँ भेजा और दादी प्रकाशमणि को गामदेवी सेन्टर (उस समय वाटरलू मेन्शन) का इंचार्ज बनाया। तब से दादी प्रकाशमणि जी के साथ हमारे लौकिक परिवार का संबंध जुटा और वह संबंध दादी के अव्यक्त होने तक इतना ही घनिष्ठ रहा।

गामदेवी सेंटर का स्थान दादी जी ने ही चुना था

वाटरलू मेन्शन में जब सेवाकेन्द्र था, तब वहां से उसको स्थानांतरित करने की बात चल रही थी। हम मकान ढूँढ़ रहे थे। दादी जी, मैं और ऊषा बहन कार में गामदेवी सेन्टर के पास ही खड़े थे। मैंने दादी जी को पूछा, कहाँ पर मकान के लिए कोशिश करें? उस समय गामदेवी का दारू-उल-मुलक भवन नया बना ही था, उसके प्रति दादी जी ने इशारा किया कि ऐसे मकान में अगर सेन्टर खुल जाये तो बहुत अच्छी ईश्वरीय सेवायें हो सकती हैं। ड्रामा प्लैन अनुसार उसी भवन में एक फ्लैट हमने बुक कराया था तो हमने अपने लौकिक परिवार से चर्चा करके दूसरे दिन दादी जी को वह फ्लैट ईश्वरीय सेवा में देने का ऑफर किया। दादी जी को वह फ्लैट बहुत ही पसंद आया और कहा कि हम आबू चलते हैं, बाबा से स्वीकृति लेकर इस फ्लैट से सेवा शुरू करेंगे। दो दिन पश्चात् हम आबू गये, ब्रह्मा बाबा से स्वीकृति ले वापिस आये और वाटरलू मेन्शन से सेवाकेन्द्र का स्थानांतरण गामदेवी में हो गया और उसी स्थान पर रहकर ब्रह्मा बाबा के अव्यक्त होने तक दादी जी ने सेवायें की। इस प्रकार सन् 1964 से 1968 तक अर्थात् पाँच वर्षों तक दादी जी से निरंतर पालना लेने और आगे बढ़ने का सौभाग्य हमें मिला।

दादी जी हमारे परिवार की अलौकिक माँ थीं

सन् 1977 में बड़ी दीदी मुंबई आयी हुई थीं, उस समय दादी प्रकाशमणि जी का विदेश यात्रा का कार्यक्रम बन रहा था। बड़ी दीदी ने मुझे कहा, रमेश, आप आबू चलो, दादी जी का

(शेष पेज 11 पर)

1990 : बेहतर समाज के लिए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन पर संयुक्त राष्ट्र संगठन के अपर सचिव सेफरनचुक व पूर्व प्रधानमंत्री राजीव गांधी, दादी प्रकाशमणि के साथ दीप प्रज्वलित करते हुए।

राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे.अब्दुल कलाम ज्ञानसरोवर में आयोजित समारोह के दौरान दादी प्रकाशमणि से स्नेह प्रदर्शित करते हुए।

भारत के तत्कालीन प्रधानमंत्री पी.वी.नरसिम्हा राव, राजस्थान के राज्यपाल डॉ.चेन्ना रेड्डी तथा दादी प्रकाशमणि।

1984 : विश्व शान्ति महासम्मेलन में राष्ट्रपति ज्ञानी जैलसिंह, दादी प्रकाशमणि तथा अन्य।

आध्यात्मिक सशक्तिकरण सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए दादी प्रकाशमणि, मंच पर काशी के जगतगुरु।

राजस्थान के तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत के साथ दादीजी।